Dr. Seema Kumari, Asst. Prof. (Pol. Sci.), RMC, VKSU
Date - 03.07.2021 , BA 1, (Subs.)

स्वतंत्रता और समानता में संबंध

स्वतंत्रता और समानता एक दूसरे के पूरक तत्वों के रूप में, स्वतंत्रता तभी सार्थक है जब उसकी व्याख्या सब मनुष्यों की समान स्वतंत्रता के रूप में की जाए। आर. एच. टॉनी, हाच जे लास्की, मैकफर्सन समानता के सिद्धांत को स्वतंत्रता का पूरक मानते हैं। यदि एक मनुष्य की स्वतंत्रता दूसरे की परतंत्रता बन जाए तो ऐसी स्थिति स्वतंत्रता की भावना के विरुद्ध होगी। स्वतंत्रता पर तर्कसंगत प्रतिबंध समानता को प्रोत्साहित करता है। सकारात्मक समानता की सबसे प्रमुख मांग यह है कि एक वर्ग को अपनी संपदा के बल पर दूसरों का शोषण करने से रोका जाए।

समानता का विचार स्वतंत्रता के बाधक के रूप में - फ्रेंच विचारक अलेक्सी द टाकवील ने लिखा है कि आधुनिक युग की सबसे प्रमुख समस्या स्वतंत्रता और समानता में सामंजस्य स्थापित करने की है। लोकतंत्र का विस्तार समानता को जितना बढ़ावा देता है स्वतंत्रता के लिए उतना ही बड़ा खतरा पैदा करता है। लोकतंत्र बहुमत का शासन स्थापित करता है जो बहुमत का तानाशाही का रूप धारण कर लेती है। स्वतंत्रता का सिद्धांत अभिरुचियों और मतों में विविधता की मांग करता है वहीं लोकतंत्र में प्रचलित समानता का सिद्धांत मतों और दृष्टिकोणों की अनुरूपता को बढ़ावा देता है। टाकवील ने समानता के सिद्धांत का खंडन नहीं किया है बल्कि

चेतावनी दी है कि विचारों की अभिव्यक्ति के क्षेत्र में समानता की मांग को अनुरूपता की मांग नहीं दे देना चाहिए और इस मांग को इस हद तक बढ़ावा नहीं देना चाहिए कि वह स्वतंत्रता के दमन का साधन बन जाए।

आइजिया बर्लिन सामाजिक आर्थिक क्षेत्र में स्वतंत्रता के नाम पर समानता का विरोध करते हैं।

जे० एस० मिल ने तर्क दिया है कि यदि एक व्यक्ति की राय बाकि समाज की मत से भिन्न हो तो समाज को यह अधिकार नहीं है कि वह उस अकेले व्यक्ति को चुप करा दे।

<u>समानता और न्याय</u>

प्लेटो का कथन है कि न्याय का अर्थ है कि समान लोगों के साथ समान बर्ताव किया जाए और असमान लोगों के साथ असमान बर्ताव किया जाए।

हेयक ने 'सामाजिक न्याय' के विचार को निरर्थक बताया। न्याय का तलाश केवल प्रक्रिया का विषय है जिसका ध्येय स्वतंत्रता को बढ़ावा देना है। हेयक जैसे विचारक स्वतंत्रता के नाम पर स्वेच्छातंत्रवाद का समर्थन करते हैं।

जान रॉल्स के न्याय सिद्धांत के अंतर्गत स्वतंत्रता और समानता को न्याय के बुनियादी सिद्धांत मानते हुए विषमता का न्यायसंगत आधार ढूंढने की कोशिश की गई है। समतावाद - समाज के सब सदस्यों को एक ही श्रृंखला की कड़ी मानता है जिसमें मजबूत कड़ियां कमजोर कड़ियों की हालत से प्रभावित होती है। यह सामाजिक न्याय का समर्थन करता है।